

सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन

सामाजिक असर का मूल्यांकन करना एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें इसके लिए जिम्मेदार योजनाबद्ध चीजों (नीतियों, कार्यक्रमों, योजनाओं, परियोजनाओं) के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों, उद्देश्य और अनपेक्षित सामाजिक परिणामों के विश्लेषण, निगरानी और प्रबंधन की प्रक्रियाओं को शामिल किया जाता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य संधारणीय और न्यायसंगत जैविकीय व मानवीय माहौल के बारे में अधिकतम जानकारी हासिल करना है।

इस परिभाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

- असर के मूल्यांकन का मकसद पारिस्थितिकी, सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से अधिक स्थायी और न्यायसंगत माहौल को तैयार करना है। लिहाजा, इस मूल्यांकन के जरिये सामुदायिक विकास और सशक्तीकरण को प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे सामाजिक पूँजी (सामाजिक नेटवर्क और भरोसा) का विकास होता है और क्षमता में वृद्धि होती है।

- सामाजिक असर के मूल्यांकन के संदर्भ को फोकस करना विकास और बेहतर विकास की दिशा में प्राप्तियों की ओर आगे बढ़ना है। इससे नकारात्मक या अनपेक्षित परिणामों की पहचान या सुधार की जा सकती है। समुदायों और अन्य हितधारकों को मदद करने से विकास के लक्ष्यों की पहचान होती है और अधिकतम सकारात्मक प्राप्तियों को सुनिश्चित किया जाता है, जो नकारात्मक असर से होनेवाले नुकसान को कम करने की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण हो सकता है।

- सामाजिक असर के मूल्यांकन की कार्यप्रणाली को व्यापक तौर पर नियोजित तरीकों से लागू किया जा सकता है, और इसे न केवल एक नियामक ढाँचे के दायरे में, बल्कि व्यापक रूप से अंजाम दिया जा सकता है।

- नीतियों, कार्यक्रमों, योजनाओं व परियोजनाओं को अपनाने के प्रबंधन की प्रक्रिया में सामाजिक असर का मूल्यांकन योगदान देता है, और इस प्रकार नियोजित रूप से संचालित तरीकों और डिजाइन में सुधार के बारे में पर्याप्त जानकारी मुहैया कराता है।

- सामाजिक असर के मूल्यांकन को स्थानीय ज्ञान के अनुकूल तैयार किया जाता है और इसमें प्रभावित लोगों व संबंधित पक्षों के संदर्भ में उनकी सहभागिता का इस्तेमाल करते हुए विश्लेषण किया जाता

है। सामाजिक असर के मूल्यांकन में इससे जुड़े हितधारकों, नियोजित चीजों की निगरानी और वैकल्पिक चीजों के विश्लेषण को शामिल किया जाता है।

- सामाजिक असर के मूल्यांकन की बेहतर विधि वह है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक और बायोफिजिकल असर को स्वाभाविक रूप से परस्पर आपस में जोड़ा गया हो। इनमें से किसी भी एक डोमेन में बदलाव करने की दशा में उसका असर अन्य डोमेन पर भी पड़ेगा। इसलिए, सामाजिक असर के मूल्यांकन से प्रभावित चीजों की समझ विकसित होती है, और इससे जो चीज सृजित होती है, उसका दूसरे डोमेन पर भी असर पड़ता है, जिस कारण उसके बाद वाले सभी चरणों पर उसका असर पड़ना स्वाभाविक है। दूसरे शब्दों में, उच्च रूप से प्रभावित होने वाले दूसरे विकल्पों पर भी निश्चित रूप से विचार किया जाना चाहिए।

- सामाजिक असर के मूल्यांकन की विधा को सीखने और सुधारने के क्रम में, उन असरों को भी निश्चित रूप से विश्लेषित किया जाना चाहिए, जो पिछली गतिविधियों के परिणामस्वरूप पैदा हुए हों। सामाजिक असर का मूल्यांकन निश्चित रूप से अपने सैद्धांतिक आधारों और उसके अभ्यास के संदर्भ में बीती हुई चीजों के संबंध में और मूल्यांकनात्मक होना चाहिए।

- सामाजिक असर का मूल्यांकन विशिष्ट रूप से योजनाबद्ध मध्यवर्ती चीजों पर लागू होता है। सामाजिक असर के मूल्यांकन की तकनीक का उपयोग आपदाओं, आबादी में बदलाव और महामारी जैसी अन्य घटनाओं से होने वाले सामाजिक प्रभाव को समझने के लिए भी किया जा सकता है।

सामाजिक असर के मूल्यांकन को एक ऐसे व्यापक फ्रेमवर्क के रूप में बेहतर तौर पर समझा जाता है, जिसमें इनसानों पर होने वाले सभी तरह के प्रभावों का आकलन किया जाता है और उन तरीकों को जाना जाता है, जिसमें समुदायों में उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और जैविकीय परिवेश के साथ सहभागिता होती है। इस प्रकार, सामाजिक असर के मूल्यांकन के निर्धारण में इन क्षेत्रों का व्यापक जुड़ाव पाया गया है :

कलात्मक प्रभाव (लैंडस्केप एनालिसिस), पुरातात्विक और सांस्कृतिक विरासत पर असर, (भौतिक और अभौतिक दोनों), सामुदायिक असर, सांस्कृतिक असर, जनसांख्यिकी प्रभाव, विकास प्रभाव, आर्थिक और राजस्व संबंधी असर, लिंग प्रभाव, स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य प्रभाव, मूल देशी अधिकारों पर असर, बुनियादी ढांचे पर असर, संस्थागत असर, पर्यटन और विश्राम प्रभाव, राजनीतिक प्रभाव

(मानवाधिकार, गवर्नेंस, लोकतांत्रिक आदि), गरीबी, फिजियोलॉजिकल प्रभाव, संसाधनों से जुड़े मामले (संसाधनों का स्वामित्व और उन तक पहुंच), सामाजिक और मानवीय पूँजी पर असर, और समाज पर होने वाले अन्य असर। इस तरह, सामाजिक मूल्यांकन के असर के विस्तृत वर्णन को आम तौर पर किसी एक इंसान के संदर्भ में नहीं, बल्कि एक टीम एप्रोच के नजरिये समझा जा सकता है। सामाजिक प्रभावों को एक सुविधाजनक अवधारणा या विचार देने के लिए इन बदलावों को समझा जा सकता है :

- **लोगों के जीने का तरीका-** यथा-, कैसे वे रहते हैं, क्या काम करते हैं, क्या खेलते हैं और रोजमर्रा के कार्यों के संदर्भ में कैसे एक-दूसरे से कैसे संवाद करते हैं।

- **उनकी संस्कृति-** यथा- उनकी साझा मान्यताएँ, रिवाज और प्रथाएँ, मूल्य और भाषा।

- **उनका समुदाय-** उनके बीच के आपसी सामंजस्य, स्थिरता, चरित्र, सेवाएँ और सुविधाएँ।

- **उनकी राजनीतिक प्रणाली-** जिस हद तक लोग अपने जीवन को प्रभावित करने वाले फैसले में भाग ले सकते हैं। लिये गये फैसलों में लोकतंत्रीकरण का स्तर और इस उद्देश्य के लिए उपयोग में लाये गये संसाधन।

- **उनका पर्यावरण -** लोग जिस तरह की हवा और पानी का उपयोग करते हैं, उसकी गुणवत्ता। उनके लिए भोजन की उपलब्धता और उसकी गुणवत्ता। जिस माहौल में वे रहते हैं, उसमें जोखिम का स्तर, उसमें धूलकणों और शोर का स्तर। साफ-सफाई की उपलब्धता, उनकी शारीरिक सुरक्षा और संसाधनों तक उनकी पहुँच और नियंत्रण।

- **उनका स्वास्थ्य और सुख-** स्वास्थ्य पूरी तरह से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक सुख की अनुभूति की दशा है, न कि केवल रोग या दुर्बलता नहीं होने की दशा।

- **उनकी व्यक्तिगत और संपत्ति के अधिकार -** खास तौर पर वे लोग जो आर्थिक रूप से प्रभावित होते हैं, या व्यक्तिगत नुकसान का अनुभव कर सकते हैं, जिसमें उनके नागरिक स्वतंत्रता का उल्लंघन शामिल हो सकता है।

- **उनकी आशंकाएं और महत्वाकांक्षाएँ-** उनकी सुरक्षा के बारे में उनकी धारणाएँ, सामुदायिक भविष्य के बारे में उनकी आशंकाएँ और उनके बच्चों के भविष्य से जुड़ी महत्वाकांक्षाओं के संदर्भ में उनके

भीतर व्याप्त डर।